''संस्कार जागृति मिशन'' को समर्पित

!! ओ३म् !!

अंक-08 वर्ष-01, नवम्बर-दिसम्बर 2019 (मासिक)

एक कदम संस्कारों की ओर

संस्कार जागृति

मासिक डिजीटल (ऑन लाइन) पत्रिका

भारतीय संस्कृति का आधार है नारी : डा.अर्चना प्रिय आर्य

संस्कार जागृति

''संस्काराद् द्विज उच्यते''

(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

(भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रही संस्था 'संस्कार जागृति मिशन' को समर्पित डिजीटल पत्रिका)

अंक-08 वर्ष-01, संवत्सर 2076 नवम्बर-दिसम्बर 2019 (मासिक)

मार्गदर्शक
आचार्य सत्यप्रिय आर्य
डा0 अर्चना प्रिय आर्य

संपादक
विवेक प्रिय आर्य

सृष्टि संवत्
1960853120

कार्यालय
संस्कार जागृति मिशन
52, ताराधाम कॉलोनी
नियर पुष्पांजलि द्वारिका
टाउनशिप (मथुरा) उ.प्र.

दूरभाष
09719910557
09719601088
09058860992

अनुक्रमणिका

लेख-कविता | पृष्ठ संख्या

वेदवाणी........03
सम्पादकीय........04
मानव जीवन में संस्कारों का औचित्य........05-06
कवि की कलम से........07
जितना बांटोगे, उतना ही पाओगे........08
आसानी से नहीं छूटतीं बुरी आदतें........09
स्वास्थ्य चर्चा........10
संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां........11-15
विज्ञापन........16

'संस्कार जागृति' पत्रिका प्राप्त करने के लिए

अपनी ई-मेल आईडी व व्हाट्सएप नम्बर हमें भेजें........09719910557

वेद वाणी

हमारे अन्तःकरण में सोम सरोवर बहने लगे

वेद मंत्र

सोम गीर्भिष्टा वयं वर्धयामो वचोविदः। सुमृडीको न आ विश।।

-ऋ० १।९१।११

ऋषिः-**राहूगणपुत्रो गोतमः**।। देवता-**सोमः**।। छन्दः-**निचृद्गायत्री**।।

विनय

हे प्रशान्तस्वरूप सोमदेव! तुम सब जगत् के सार हो, जीवन-रस हो, फिर भी प्रकृति के विषयों में फंसा हुआ मनुष्य-संसार तुम्हें नहीं जानता, तुम कुछ हो यह कभी अनुभव ही नहीं करता, परन्तु हम लोग जिन्होंने तुम्हारी दया से तुम्हारी थोडी-बहुत अनुभूति का सुख पाया है, अपना यही कार्य समझते हैं कि पागलों की तरह सब जगह तुम्हारे गुण गाते फिरें-गाते फिरा करें। तुम्हारी भक्ति ने ही हमें ''वचोविद'' भी बना दिया है-तुम्हारी भक्ति से हम वाणी की शक्ति को, रहस्य को जान गये हैं और इस शक्ति का प्रयोग करना भी जान गये हैं, अतः अपनी वाणियों से हम सदा कीर्तन करते हैं, तुम्हारा यश गाते हैं, तुम्हारे स्वरूप का वर्णन करते हैं। जहां विषयग्रस्त मानवी हृदयों ने तुम्हे निकाल रखा है या जहां प्रकृतिवाद ने तुम्हारे लिए जगह नहीं रखी है, वहां भी तुम्हारा नाम फैलाते हैं, तुम्हें पहुंचाते हैं। मानो तुम्हारे सैनिक बनकर सांसारिक दृष्टि से तुम्हारा राज्य बढ़ाने का यत्न करते हैं, परन्तु हे देव! तुम इतना करो कि सात्विक सुख के दाता होते हुए सदा हमारे अंदर प्रविष्ट रहो, बस हम यही चाहते हैं। हम तुच्छ लोग तुझे कहां से बढ़ा सकते हैं! हम तुझे फैलाते हैं, तुम्हारा राज्य फैलाते हैं- यह कहना कितनी धृष्टता का वचन है। हे सर्वशक्तिमन्! हे अनन्त, अपार! वास्तव में तुम्हीं जितना हमारे अंदर प्रविष्ट होते हो उतना ही हम में तुम्हारा अवर्णनीय सात्विक सुख अनुभूत होता है और उस आनंद में मस्त होकर हम तुम्हारे गुण गाते फिरते हैं। तब हमारे एक-एक अंग से, हमारी एक-एक चेष्टा से, तुम्हारा प्रकाश होता है, अतः हमारी प्रार्थना तो यही है कि तुम हमारे अन्दर प्रविष्ट हो जाओ, तुम हममें आविष्ट हो जाओ। जितनी मात्रा में हममें प्रविष्ट हो ओगे, उतनी ही मात्रा में हमारे द्वारा जगत् में तुम्हारा प्रचार व प्रकाश होगा। हे प्रभो! इस सात्विक सुख से हमें अनुप्राणित करते हुए हममें आविष्ट हो जाओ।

शब्दार्थ

सोम- हे सोमदेव! **वयं वचोविदः**- वाणी के वेत्ता हम लोग **त्वा**- तुझे **गार्भिः**- अपनी वाणियों द्वारो **वर्धयामः**- बढ़ाते हैं। **सुमृडीकः**- उत्तम सुख देने वाले होते हुए तुम **नः आविश**- हममें प्रविष्ट हो जाओ।

('आचार्य अभयदेव जी' की पुस्तक 'वैदिक विनय' से)

आपके विचार व सुझाव आमंत्रित हैं

प्रिय साथियों आप भी अपने सुझाव हमें भेज सकते हैं, जिन्हें हम अपने अगले अंक में प्रकाशित कर सकें।

E-Mail : sanskarjagratimission@gmail.com 09719910557

सम्पादकीय

''मानने से पहले जानो''

विवेक प्रिय आर्य
(सम्पादक)

एक बार अकबर ने बीरबल से पूछा की बीरबल यह अविद्या क्या है? बीरबल ने बोला कि आप मुझे 4 दिन की छुट्टी दे दो फिर मैं आपको बताऊंगा! अकबर राजी हो गया और उसने चार दिनों की छुट्टी दे दी! बीरबल मोची के पास गया और बोला कि भाई जूती बना दो, मोची ने नाप पूछी तो बीरबल ने बोला भैया ये नाप वाप कुछ नहीं। डेढ़ फुट लंबी और एक बित्ता चौड़ी बना दो और इसमें हीरे जवाहरात जड देना। सोने और चांदी के तारों से सिलाई कर देना और हाँ पैसे वैसे की चिंता मत करना जितना मांगोगे उतना मिलेगा। तो मोची ने भी कहा ठीक है भैया तीसरे दिन ले लेना!

तीसरे दिन जूती मिली तब पारितोषिक देने के पहले बीरबल ने उस मोची से एक ठोस आश्वासन ले लिया कि वह किसी भी हालात में इस जूती का कभी भी जिक्र नहीं करेगा यानि हर हालात में अनजान बना रहेगा। अब बीरबल ने एक जूती अपने पास रख ली और दूसरी मस्जिद में फेंक दी। जब सुबह मौलवी जी नमाज पढ़ने (बाँग देने)) के लिए मस्जिद गए तो मौलवी को वो जूती वहाँ पर मिली। मौलवी जी ने सोचा यह जूती किसी इंसान की तो हो ही नहीं सकती जरूर अल्लाह मियांनमाज पढ़ने आया होंगे और उसकी छूट गई होगी। तो उसने वह जूती अपने सर पर रखी, मत्थे में लगाई और खूब जूती को चाटा। क्यों?

क्योंकि वह जूती अल्लाह की थी ना। वहां मौजूद सभी लोगों को दिखाया सब लोग बोलने लगे कि हां भाई यह जूती तो अल्लाह की रह गई उन्होंने भी उसको सर पर रखा और खूब चाटा। यह बात अकबर तक गई। अकबर ने बोला, मुझे भी दिखाओ। अकबर ने देखा और बोला यह तो अल्लाह की ही जूती है। उसने भी उसे खूब चाटा, सर पर रखा और बोला इसे मस्जिद में ही अच्छी तरह अच्छे स्थान पर रख दो ! बीरबल की छुट्टी समाप्त हुई, वह आया बादशाह को सलाम ठोका और उतरा हुआ मुंह लेकर खड़ा हो गया। अब अकबर ने बीरबल से पूछा कि क्या हो गया मुँह क्यों 10 कोने का बना रखा है। तो बीरबल ने कहा राजा साहब हमारे यहां चोरी हो गई। अकबर बोला - क्या चोरी हो गया?

बीरबल ने उत्तर दिया - हमारे परदादा की जूती थी चोर एक जूती उठा ले गया, एक बची है। अकबर ने पूछा कि क्या एक जूती तुम्हारे पास ही है? बीरबल ने कहा- जी मेरे पास ही है । उसने वह जूती अकबर को दिखाई। अकबर का माथा ठनका और उसने मस्जिद से दूसरी जूती मंगाई और बोला 'या अल्लाह' मैंने तो सोचा कि यह जूती अल्लाह की है मैंने तो इसे चाट चाट के चिकनी बना डाली बीरबल ने कहा राजा साहब यही है अविद्या। पता कुछ भी नहीं और भेड़ चाल में चले जा रहे है।

किसी की कही बात पर आखँ मूंद कर विश्वास करना ठीक नही, पहले सत्यता की परख कर लेनी चाहिए। आज के दौर में भी बढ़ता पाखण्ड, अंधविश्वास अविद्या की ही देन है। अतः सुनी-सुनाई बातों पर भूलकर भी विश्वास नही करना चाहिए। मानने से पहले उसे जानना जरूरी होता है।

मानव जीवन में संस्कारों का औचित्य

लेखिका : डा. अर्चना प्रिय आर्य, अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

डा० अर्चना प्रिय आर्य
एम.ए. (संस्कृत/हिंदी)
बी.एड., पीएच.डी.

मानव की शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक उन्नति के लिये जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त विभिन्न अवस्थाओं के अनुकूल संस्कारों की व्यवस्था वेद के मनीषी एवं कर्मकाण्ड के मर्मज्ञ ऋषि-मुनियों ने बहुत ही सुन्दर ढंग से की है। इसलिये यह कहा गया है -

''संस्काराद् द्विज उच्यते''

संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य द्विज कहलाते हैं। अन्यथा संस्कार हीन व्यक्ति द्विज बनने के योग्य नहीं होते और वे धन-धान्य से सम्पन्न होकर भी शुद्र ही रहते है। संसार का सुख, भौतिकता का सुख क्षणिक है केवल भौतिक साधन मनुष्य के तब तक सुख के साधन नहीं बन सकते जब तक कि सच्चे मानव का, सहदय मानव का निर्माण नहीं होता है। मानव निर्माण की आधारशिला है संस्कार। एक, दो, तीन नहीं अपितु 16 संस्कारों से संयुक्त होकर ही मानव-मानव बन सकता है। इस प्रकार मानव को मर्यादित मानव बनाते है संस्कार, दानव को मानव बनाते हैं संस्कार, चरित्र निर्माण करते हैं संस्कार, जीव को लक्ष्य तक पहुंचाते हैं संस्कार, मानवीय गुणों का विकास करत हैं संस्कार, आत्मोन्नति के साधन हैं संस्कार, जन्म-जन्मातरों के दोषों का अपनयन कर उनमें उत्तम गुणों का संचार करते है संस्कार, संस्कार से मानव कमनीय बनात है। अत: जीवन निर्माण के लिये हमें संस्कारों को अपनाना चाहिये। इस विलासिता भरे जीवन में आज मानव पशु से भी निम्न दशा की ओर अग्रसर हो गया है। उसकी गिद्ध दृष्टि, उसकी धन के प्रति अतृप्त लालसा भाई को भाई, पिता को पिता, बहिन को बहिन नहीं समझ रही है, परिवार टूट रहे हैं, स्नेह सूत्र में आबद्ध सौहार्द मणि बिखर गये हैं।

अत: आज आवश्यकता है मननशील, सहदय, मर्यादित, सच्चारभ एवं उदार हदय वाले मानव निर्माण की। यदि हमें ऐसे उत्तम मानव का निर्माण करना है तो संस्कार प्रणाली को अपनाना होगा। अपने परिवार में संस्कारों को पूर्णविधि के साथ सम्पन्न करना या कराना होगा। जब हमें कभी कैमरे के सामने आना पड़ता है तो हम सभी प्रकार से सुन्दर दिखना चाहते हैं। कपड़े साफ सुथरे कोई दाग न लगा हो, शेविंग व कटिंग आधुनिक फैशन के अनुसार हो, चेहरे पर यदि कोई दाग हो तो उसे मेकअप से दबाने की कोशिश करते हैं अर्थात् कहीं किसी प्रकार की कोई कमी न रहने पाए। यदि फोटो अच्छा आता है तो हम उसे सामने रखते हैं और खराब बन जाए तो छिपाकर रख देते हैं। इसी प्रकार हमारे जीवन में भी एक ऐसा मूवी कैमरा काम कर रहा है जिसमें परिणाम देने की सुविधा है। वह हमारी जानकारी में नहीं है। शायद इसलिये हम उस प्रकार सजने, सवॅरने की कोशिश ही नहीं करते हैं। हम भूल जाते हैं कि जो भी काम कर रहे हैं उसकी साथ-साथ पिक्चर बनती जा रही है जब उसका परिणाम 'हमारा बच्चा' हमारे सामने आता है तो हम घबरा जाते हैं और सोचते हैं कि ये क्या हो गया? परन्तु अब कुछ नहीं हो सकता है। न उसे छिपा सकते हैं न ही रख सकते हैं। जीवन भर उसे झेलते रहते हैं।

इस कार्य से हम इस निष्कर्ष पर पहुॅचते हैं कि हमारा परिणाम ठीक आए अर्थात् हमारी सन्तान उत्तम हो, सर्वागीण हो, उसके लिये हमे बहुत पहले से तैयार रहना पडेगा, इसलिये ऐसा कहा जाता है कि जो महिला आज मां बनने जा रही है, वह बचपन से ही अपने अन्दर किसी प्रकार के अवगुण या बुरी आदते न आने दे। माता, पिता, गुरू, परिवारीजन भी इस बात का पूरा ध्यान रखे, नहीं तो आपकी आदतें (अच्छी-बुरी) बच्चे में आ जायेगीं। इसलिये योजना बनाकर काम करना पडेगा।... (शेष पेज 06 पर)

पृष्ठ 05 का शेष....

मानव जीवन में संस्कारों का औचित्य (लेखक : डा0 अर्चना प्रिय आर्य)

.....जो भी कमी रह जायेगी आपके बच्चे को भुगतनी पड़ेगी। इसी प्रकार आपका गुण उसके व्यक्तित्व विकास में सहायक होगा। गीता के अनुसार –

'न हि कश्चित् क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्'

बिना कर्म किये कोई मनुष्य क्षणभर के लिये भी स्थित नहीं रह सकता। अतः कर्म जीवन में आवश्यक है। ये कर्म शुभ भी होते हैं एवम् अशुभ भी होते हैं। निरन्तर किसी कर्म का करने से उसकी वृत्ति बन जाती है। यह वृत्ति ही फिर मनुष्य के कर्म करने की प्रवृत्ति का हेतु बन जाती है। यह प्रवृत्ति या अभ्यास चित्त पर अंकित होता है, चित्त पर अंकित यह अभ्यास या वृत्ति इस शरीर के समाप्त होने पर सुक्ष्म शरीर के साथ बनी रहती है फिर पुनः शरीर धारण कर लेने पर सुक्ष्म शरीर पर अंकित वृत्ति के अनुसार व्यक्ति की शुभ–अशुभ वृत्ति के अनुसार कर्म करने की स्फुरणा प्राप्त होती है कर्म करने की इस स्फुरणा देने वाली वृत्ति का नाम संस्कार है। ये संस्कार शुभ–अशुभ जैसे भी हों जन्म–जन्मातर तक साथ रहते हैं पूर्व जन्मों के अशुभ संस्कारों के परिवर्तन के लिये शुभ संस्कारों के उन्नयन के लिये ही हमारे पूर्वजों ने संस्कार प्रणाली की आधार शिला रखी है।

वर्तमान समय मे यदि माता–पिता, गुरू आदि को यह ज्ञान हो जाये कि दोष युक्त साधनों से अर्जित धन मूलतः पतन का मुख्य कारण है। इससे सन्तान का निर्माण न होगा, सन्तान उत्तम न बनेगी और जब सन्तान उत्तम न होगी तो वह पारिवारिक अशान्ति का कारण बनेगी। आज की अशान्ति, पारिवारिक स्नेह सूत्र–दूषित व्यवसाय से अर्जित सम्पति के उपभोग से टूट रहे हैं। अधिकांशः माता–पिता अपनी सन्तान से दुःखीं हैं।

'पुम् नाम नरकात् त्रायते इति पुत्रः'

वे पुत्र दुःखों से, माता–पिता की रक्षा करने का विचार भी नहीं करते हैं। पुत्र नाम को सार्थक नहीं करते हैं। इसका कारण दूषित पाप मार्ग से अर्जित सम्पत्ति का उपभोग है। अगर संस्कारों की प्रणाली को श्रद्धा के साथ पुनर्जीवित कर दिया जाये तथा सबको अपने–अपने कर्तव्य का सम्यक् बोध करा दिया जाये तो हमारा भारत फिर महान बन सकता है, विश्वगुरू बन सकता है। महर्षि मनु के शब्द चरितार्थ हो सकते हैं –

एतद् देशप्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मनः।
स्वं–स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवः।।

(मनुस्मृति 2.20)

कहेगा जगत् फिर से एक स्वर में सारा।
वही पूज्य भारत गुरू है हमारा।।

ओजस्वी प्रवक्ता एवं मधुर गायिका
श्रद्धेया डा.अर्चना प्रिय आर्य जी
(अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन)
की अमृतमयी वाणी में
मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम कथा, भगवती सीता चरित
यज्ञ कथा, राष्ट्र कथा एवं आर्य भजनोपदेश
कराने के लिए सम्पर्क करें : 09719910557, 09719601088

कवि की कलम से

कर्ता बिना नहीं हो काम...

ईश्वर की सत्ता को जो लोग मानने से इंकार करते हैं, उन लोगो को तर्क एवं प्रमाण के आधार पर ईश्वर की सिद्धि करवाती एक कविता

रचियता : कवि प्रज्जवल आर्य

जगत की रचना देख समझकर, रचनाकार की हो पहचान।
इतना अचरज भरा जगत में, कर्ता बिना नही हो काम ।।टेक।।

धरती सूरज तारे चंदा,
अनुशासन में चलते हैं।
सूरज की अग्नि के शोले,
किस ईंधन से जलते हैं।।
ठीक समय पर सूरज चंदा,
ढलते और निकलते हैं।
किसने इन्हें नियम से बांधा,
पलभर भी ना टलते हैं।।
है कोई संचालक सच में,
जो रखता है इनका ध्यान।
इतना अचरज भरा जगत में,
कर्ता बिना नही हो काम।।१।।

बेर के फल की रक्षा खातिर,
किसने शूल लगाया है,
नन्हे से एक बीज के अंदर,
बरगद बड़ा छुपाया है,
मीठा नीर भरा गन्ने में,
कड़वा नीम बनाया है,
आलू अदरक मूली गाजर,
भू में इन्हें दबाया है,
धूल कणों में फसल उगा दी,
चना बाजरा सरसो धान
इतना अचरज भरा जगत में,
कर्ता बिना नही हो काम ।।2।।

मछली के बच्चे को किसने,
तैराकी सिखलाई है,
बल्ब जले जिससे जुगनू का वो,
विद्युत कहाँ से आई है,
मोरपंख में रंग भरे और,
तितली खूब सजाई है,
दीमक की मेहनत को देखो,
पेड़ पे धूल चढ़ाई है,
उल्लू, चमगादड़ के नैन को,
दिवस की ना होती पहचान
इतना अचरज भरा जगत में,
कर्ता बिना नही हो काम ।।3।।

मानव के चोले की कर दी,
किसने गजब सिलाई है,
शक्ल और अंगुली की रेखा,
एक जैसी ना पाई है,
नर तन जैसी रचना नर पे,
हरगिज ना बन पाई है,
ईश्वर की महिमा ''प्रज्जवल'' ने,
कविता से समझाई है,
ईश्वर को जो फिर ना माने,
उसको मूरख लेना जान
इतना अचरज भरा जगत में,
कर्ता बिना नही हो काम ।।4।।

''जितना बांटोगे, उतना ही अधिक पाओगे''

लेखक : आचार्य सत्यप्रिय आर्य, संरक्षक : संस्कार जागृति मिशन

चलभाष : 09719601088

एक गांव में धर्मदास नामक एक व्यक्ति रहता था। बातें तो बड़ी ही अच्छी- अच्छी करता था पर था एकदम कंजूस। कंजूस भी ऐसा वैसा नहीं बिल्कुल मक्खीचूस। चाय की बात तो छोड़ों वह किसी को पानी तक के लिए नहीं पूछता था। साधु-संतों और भिखारियों को देखकर तो उसके प्राण ही सूख जाते थे कि कहीं कोई कुछ मांग न बैठे। एक दिन उसके दरवाजे पर एक महात्मा आये और धर्मदास से सिर्फ एक रोटी मांगी। पहले तो धर्मदास ने महात्मा को कुछ भी देने से मना कर दिया, लेकिन तब वह वहीं खड़ा रहा तो उसे आधी रोटी देने लगा। आधी रोटी देखकर महात्मा ने कहा कि अब तो मैं आधी रोटी नहीं पेट भरकर खाना खाऊंगा। इस पर धर्मदास ने कहा कि अब वह कुछ नहीं देगा। महात्मा रातभर चुपचाप भूखा-प्यासा धर्मदास के दरवाजे पर खड़ा रहा। सुबह जब धर्मदास ने महात्मा को अपने दरवाजे पर खड़ा देखा तो सोचा कि अगर मैंने इसे भरपेट खाना नहीं खिलाया और यह भूख-प्यास से यहीं पर मर गया तो मेरी बदनामी होगी। बिना कारण साधु की हत्या का दोष लगेगा। धर्मदास ने महात्मा से कहा कि बाबा तुम भी क्या याद करोगे, आओ पेट भरकर खाना खा लो। महात्मा भी कोई ऐसा वैसा नहीं था। धर्मदास की बात सुनकर महात्मा ने कहा कि अब मुझे खाना नहीं खाना, मुझे तो एक कुआं खुदवा दो। 'लो अब कुआं बीच में कहां से आ गया' धर्मदास ने साधु महाराज से कहा। धर्मदास ने कुआं खुदवाने से साफ मना कर दिया। साधु महाराज अगले दिन फिर रातभर चुपचाप भूखा- प्यासा धर्मदास के दरवाजे पर खड़ा रहा। अगले दिन सुबह भी जब धर्मदास ने साधु महात्मा को भूखा-प्यासा अपने दरवाजे पर ही खड़ा पाया तो सोचा कि अगर मैने कुआं नहीं खुदवाया तो यह महात्मा इस बार जरूर भूखा-प्यास मर जायेगा और मेरी बदनामी होगी। धर्मदास ने काफी सोच- विचार किया और महात्मा से कहा कि साधु बाबा मैं तुम्हारे लिए एक कुआं खुदवा देता हूं और इससे आगे अब कुछ मत बोलना। नहीं, एक नहीं अब तो दो कुएं खुदवाने पड़ेंगे, महात्मा की फरमाइशें बढ़ती ही जा रही थीं। धर्मदास कंजूस जरूर था बेवकूफ नहीं। उसने सोचा कि अगर मैंने दो कुएं खुदवाने से मनाकर दिया तो यह चार कुएं खुदवाने की बात करने लगेगा। इसलिए धर्मदास ने चुपचाप दो कुएं खुदवाने में ही अपनी भलाई समझी। कुएं खुदकर तैयार हुए तो उनमें पानी भरने लगा। जब कुओं में पानी भर गया तो महात्मा ने धर्मदास से कहा, दो कुओं में से एक कुआं मैं तुम्हें देता हूं और एक अपने पास रख लेता हूं। मैं कुछ दिनों के लिए कहीं जा रहा हूं, लेकिन ध्यान रहे मेरे कुएं में से तुम्हें एक बूंद पानी भी नहीं निकालना है। साथ ही अपने कुएं में से सब गांव वालों को रोज पानी निकालने देना है। मैं वापस आकर अपने कुएं से पानी पीकर प्यास बुझाऊंगा। धर्मदास ने महात्मा वाले कुएं के मुंह पर एक मजबूत ढक्कन लगवा दिया। सब गांव वाले रोज धर्मदास वाले कुएं से पानी भरने लगे। लोग खूब पानी निकालते पर कुएं में पानी कम न होता। शुद्ध-शीतल जल पाकर गांव वाले निहाल हो गये थे और महात्मा जी का गुणगान करते न थकते थे। एक वर्ष के बाद महात्मा पुन: उस गांव में आये और धर्मदास से बोले कि उसका कुआं खोल दिया जाये। धर्मदास ने कुएं का ढक्कन हटवा दिया। वहां लोग यह देखकर हैरान रह गये कि कुएं में एक बूंद भी पानी नहीं था। महात्मा ने कहा, कुएं से कितना भी पानी क्यों न निकाला जाए वह कभी खत्म नहीं होता अपितु बढ़ता जाता है। कुएं का पानी न निकालने पर कुआं सूख जाता है इसका स्पष्ट प्रमाण तुम्हारे सामने है और यदि किसी कारण से कुएं का पानी न निकालने पर पानी नहीं भी सुखेगा तो वह सड़ अवश्य जायेगा और किसी काम में नहीं आयेगा। महात्मा ने आगे कहा, कुएं के पानी की तरह ही धन-दौलत की भी तीन गतियां होती हैं। .... (शेष पेज 09 पर)

प्रेरक प्रसंग

आसानी से नहीं छूटतीं बुरी आदतें

वंदना प्रिय आर्य
एम.ए., एम.फिल. (संस्कृत)
उपाध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

एक अमीर आदमी अपने बेटे की किसी बुरी आदत से बहुत परेशान था। वह जब भी बेटे से आदत छोड़ने को कहते तो एक ही जवाब मिलता, अभी मैं इतना छोटा हूँ, धीरे-धीरे ये आदत छोड़ दूंगा! पर वह कभी भी आदत छोड़ने का प्रयास नहीं करता। उन्ही दिनों एक महात्मा गाँव में पधारे हुए थे, जब आदमी को उनकी ख्याति के बारे में पता चला तो वह तुरंत उनके पास पहुँचा और अपनी समस्या बताने लगा। महात्मा जी ने उसकी बात सुनी और कहा ठीक है, आप अपने बेटे को कल सुबह बागीचे में लेकर आइये, वहीं मैं आपको उपाय बताऊंगा। अगले दिन सुबह पिता-पुत्र बागीचे में पहुंचे। महात्मा जी बेटे से बोले, आइये हम दोनों बागीचे की सैर करते हैं, और वो धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे। चलते-चलते ही महात्मा जी अचानक रुके और बेटे से कहा, क्या तुम इस छोटे से पौधे को उखाड़ सकते हो? जी हाँ, इसमें कौन सी बड़ी बात है और ऐसा कहते हुए बेटे ने आसानी से पौधे को उखाड़ दिया। फिर वे आगे बढ़ गए और थोड़ी देर बाद महात्मा जी ने थोड़े बड़े पौधे की तरफ इशारा करते हुए कहा, क्या तुम इसे भी उखाड़ सकते हो? बेटे को तो मानो इन सब में कितना मजा आ रहा हो, वह तुरंत पौधा उखाड़ने में लग गया. इस बार उसे थोड़ी मेहनत लगी पर काफी प्रयत्न के बाद उसने इसे भी उखाड़ दिया। वे फिर आगे बढ़ गए और कुछ देर बाद पुनः महात्मा जी ने एक गुडहल के पेड़ की तरफ इशारा करते हुए बेटे से इसे उखाड़ने के लिए कहा। बेटे ने पेड़ का ताना पकड़ा और उसे जोर-जोर से खींचने लगा। पर पेड़ तो हिलने का भी नाम नहीं ले रहा था। जब बहुत प्रयास करने के बाद भी पेड़ टस से मस नहीं हुआ तो बेटा बोला, अरे ! ये तो बहुत मजबूत है इसे उखाड़ना असंभव है । महात्मा जी ने उसे प्यार से समझाते हुए कहा बेटा, ठीक ऐसा ही बुरी आदतों के साथ होता है, जब वे नयी होती हैं तो उन्हें छोड़ना आसान होता है, पर वे जैसे जैसे पुरानी होती जाती हैं इन्हें छोड़ना मुश्किल होता जाता है।

पृष्ठ 08 का शेष....

जितना बांटोगे, उतना ही अधिक पाओगे (लेखक : आचार्य सत्यप्रिय आर्य)

उपयोग, नाश अथवा दुरुपयोग। धन-दौलत का जितना इस्तेमाल करोगे वह उतना ही बढ़ती जायेगी। धन-दौलत का इस्तेमाल न करने पर कुएं के पानी की वह धन-दौलत निरर्थक पड़ी रहेगी। उसका उपयोग संभव नहीं रहेगा या अन्य कोई उसका दुरुपयोग कर सकता है। अतः अर्जित धन-दौलत का समय रहते सदुपयोग करना अनिवार्य है। ज्ञान की भी कमोबेश यही स्थिति होती है। धन-दौलत से दूसरों की सहायता करने की तरह ही ज्ञान भी बांटते चलो। हमारा समाज जितना अधिक ज्ञानवान, जितना अधिक शिक्षित व सुसंस्त होगा उतनी ही देश में सुख-शांति और समृद्धि आयेगी। फिर ज्ञान बांटने वाले अथवा शिक्षा का प्रचार-प्रसार करने वाले का भी कुएं के जल की तरह ही कुछ नहीं घटता अपितु बढ़ता ही है, धर्मदास ने कहा, हां, गुरुजी आप भी बिल्कुल ठीक कह रहे हो। मुझे अपनी गलती का अहसास हो गया है। इस घटना से धर्मदास को सही ज्ञान और सही दिशा मिल गयी थी।

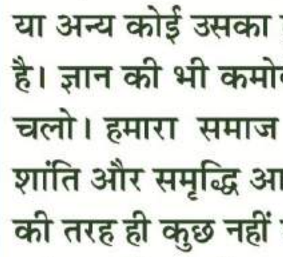

सभी देशवासियों को
नववर्ष 2020 की हार्दिक शुभकामनाएं

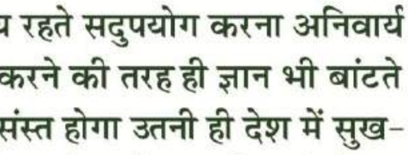

वीरेन्द्र कुमार गौतम उद्योगपति व समाजसेवी (भावनगर, गुजरात)

स्वास्थ्य चर्चा | लाभकारी है लहसुन का उपयोग

नीति प्रिय आर्य

प्राचीनकाल में लहसुन का उपयोग आयुर्वेदिक उपचार के लिए होता था। लहसुन एंटी-वायरल, एंटी-फंगल, एंटी-ऑक्सीडेंट और एंटी-बैक्टीरियल गुणों से भरपूर होता है। इसमें एलीसीन और दूसरे सल्फर यौगिक मौजूद होते हैं। साथ ही लहसुन में एजोइन जैसा तत्व और एलीन जैसा यौगिक भी मौजूद होता है, जो लहसुन को और ज्यादा असरदार औषधि बना देते हैं। हालांकि, इन तत्वों और यौगिकों की वजह से ही लहसुन का स्वाद कड़वा होता है, लेकिन यही घटक लहसुन को संक्रमण दूर करने की क्षमता भी देते हैं। आप अपने भोजन में सीमित मात्रा में लहसुन को शामिल कर सकते हैं आप हर रोज खाली पेट कच्चे या सूखे लहसुन की कुछ कलियों का सेवन कर सकते हैं। उसके कुछ देर बाद आप गुनगुने पानी में नींबू का शरबत बनाकर भी पी सकते हैं। आप चाहें तो एक या दो लहसुन की कलियों को बारीक काटकर पालक की स्मूदी में मिलाकर उसका सेवन कर सकते हैं। अगर आपको साबूत लहसुन खाना पसंद नहीं, तो आधा चम्मच से भी कम लहसुन का पेस्ट या एक लहसुन की कली को बारीक काटकर खाने में उपयोग करें। आप लहसुन को रोज सब्जी या सूप में डालकर भी खा सकते हैं। आप लहसुन की चाय भी पी सकते हैं। लहसुन की कुछ कलियों को आप घी में भूनकर भी खा सकते हैं। दो से तीन लहसुन की कलियों को हरे प्याज, ब्रोकली और चुकंदर के रस के साथ मिलाकर उसका सेवन करें। ध्यान दें कि अगर आपको कोई एलर्जी है, तो अपने आहार में लहसुन को शामिल करने से पहले डॉक्टर से जरूर पूछ लें। आइए अब एक-एक करके लहसुन के लाभकारी गुणों के बारे में जानते हैं-

विभिन्न रोगों में लहसुन का उपचार :-

1. कान में होने वाले हल्के संक्रमण या दर्द में भी लहसुन फायदेमंद होता है।
लहसुन में मौजूद एंटीबैक्टीरियल, एंटीफंगल और एंटीवायरलगुण कान के दर्द या संक्रमण से राहत दिलाते हैं। आप चाहें तो लहसुन का तेल कान में ड्ला सकते हैं। ये तेल बाजार में उपलब्ध होता है। इसके अलावा, आप घर में भी लहसुन का तेल बना सकते हैं।

2. हाई ब्लड प्रेशर में घरेलू उपाय के तौर पर लहसुन का सेवन काफी उपयोगी साबित हुआ है। दरअसल, लहसुन में बायोएक्टिव सल्फर यौगिक, एस-एललिस्सीस्टीन मौजूद होता है, जो ब्लड प्रेशर को कम करने में सहायक होता है।

3. मौसम में बदलाव की वजह से सर्दी-जुकाम होना बहुत ही आम बात है। लहसुन में एंटी-बैक्टीरियल, एंटी-वायरल, एंटी-फंगल और एंटी-ऑक्सीडेंटलगुणों की भरमार होती जो सर्दी-जुकाम के वायरस से लड़ने में मदद करता है।

4. लहसुन बढ़ते वजन को रोकने में काफी हद तक मददगार साबित हो सकता है। यह, डीपोजेनिक ऊत्तकों की अभिव्यक्ति को रोकने में मदद करता है, थर्मोजेनेसिस को बढ़ाता है और हानिकारक कोलेस्ट्रॉल को कम करता है। अपने इन अनोखे गुणों की वजह से लहसुन आपको मोटापे से राहत दिला सकता है।

5. शरीर में विषाक्त पदार्थों के जमा होने से या फिर किसी संक्रमण की वजह से कील-मुंहासे हो सकते हैं। ऐसे में लहसुन का नियमित सेवन कील-मुंहासों से छुटकारा दिलाने में मददार साबित हो सकता है।

(हालांकि ये सभी घरेलू उपचार हैं फिर भी डॉक्टर से परामर्श ले लेना बेहतर होगा)

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

चन्दैना (सहारनपुर) में आर्य समाज के वार्षिकोत्सव में प्रवचन करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी। मंचस्थ हैं अन्य विद्वान।

कोसीकलां आर्य समाज के वार्षिकोत्सव में प्रवचन करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के साथ मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी व संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी

कोसीकलां में आयोजित आर्य सम्मेलन को सम्बोधित करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी।

कोसीकलां व चन्दैना में आयोजित आर्य महासम्मेलन में कार्यक्रम के दौरान सभा को सम्बोधित करतीं व यज्ञ कराते संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी व संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

दिल्ली के मंडावली में आयोजित आर्य समाज के वार्षिकोत्सव में प्रवचन करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी। मंचस्थ हैं आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी।

मंडावली में प्रातःकाल यज्ञ सम्पन्न कराते मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी व अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी।

दिल्ली की मंडावली आर्य समाज में आयोजित कार्यक्रम के दौरान संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष श्रद्धेया डा.अर्चना प्रिय आर्य जी को महिलाओं द्वारा सम्मानित किया गया और प्यार, स्नेह व दुलार दिया।

मंडावली में मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी को सम्मानित करते समाज के पदाधिकारीगण।

मंडावली में मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी प्रवचन करती हुयीं।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

ऊंचागांव में संस्कार जागृति मिशन द्वारा आयोजित वैदिक सत्संग के दौरान यज्ञ करते पदाधिकारीगण व ग्रामीवासी।

योगऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज व आचार्य स्वदेश जी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करते मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य जी

दिपावली पर्व पर संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी ब्रहत्व में कार्यालय पर यज्ञ करते पदाधिकारीगण।

मिशन सचिव विवेक प्रिय आर्य जी की बिटिया का जातकर्म संस्कार करातीं अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय जी।

विवेक प्रिय जी को सम्मानित करते ब्रज प्रेस क्लब अध्यक्ष केके उपमन्यु व योगेश नौहवार

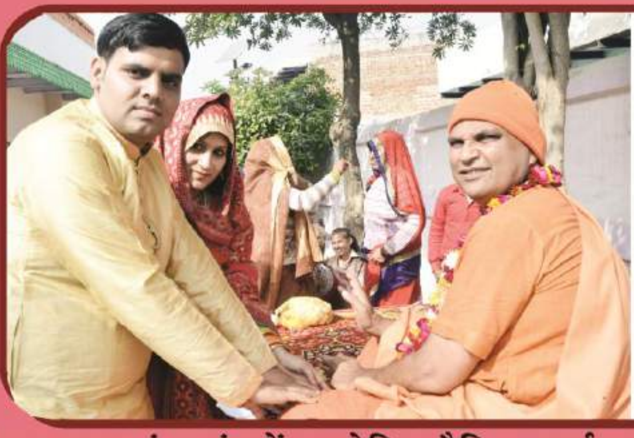

मिशन द्वारा ऊंचागांव में आयोजित वैदिक कार्यक्रम में वेद मंदिर अधिष्ठाता आचार्य स्वदेश महाराज जी से आशीर्वाद प्राप्त करते सचिव विवेक प्रिय आर्य जी व नीति प्रिय आर्य जी। अभार व्यक्त करते मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य प्रधान जी।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां मीडिया की नजरों में

13 अक्टूबर 2019 | राजपथ मथुरा

भारतीय संस्कृति का आधार है नारीः अर्चना प्रिय

आर्य समाज कोसीकलां के वार्षिकोत्सव का समापन

कोसीकलां, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। आर्यनगर स्थित आर्य समाज धर्मशाला में शनिवार को समाज के वार्षिकोत्सव का समापन हुआ। जिसमें आये आर्य विद्वानों ने विभिन्न विषयों पर विचार रखे। संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही नारी का स्थान पूज्यनीय रहा है। समय.समय पर नारी ने कभी मां, बहिन, बेटी तो कभी स्त्री के रूप में अपना सर्वस्व समर्पित कर के राष्ट्र की रक्षा की है, अपनी संस्कृति को बचाया है। नारी राष्ट्र जीवन का आधार है। उन्होंने कहा कि वर्तमान में नारी दिशा भ्रमित हुई है। पश्चात सभ्यता के रंग में रंगी जा रही है जो अत्यंत ही सोचनीय है। नारी जाति को अपने अतीत को याद करते हुए अपने गौरवपूर्ण स्थान को सुरक्षित रखने की जरूरत है। आचार्य भूदेव शास्त्री ने कहा कि आजादी की लड़ाई में आर्य समाज का अहम योगदान रहा है। सत्यार्थ प्रकाश से अनेक क्रांतिकारियों को प्रेरणा हुई। कार्यक्रम को महाशय चतर सिंह, उदयवीर आर्य, सुरभि आर्या ने भजन प्रस्तुत किए। प्रातःकाल 21 कुंडीय यज्ञ आचार्य देशराज शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआए जिसमें बड़ी संख्या में यज्ञप्रेमियों द्वारा आहुतियां दी गई। संचालन वीरेंद्र सिंह आर्य व आभार आर्य समाज के प्रधान डॉ. अमर सिंह पौनियाँ ने किया। कार्यक्रम में आर्य समाज के मंत्री विजय आर्य, नंदकिशोर आर्य, ओमप्रकाश आर्य, भगवान देव वानप्रस्थी, विवेक प्रिय आर्य, दीनदयाल आर्य, शरद आर्य, भोपाल आर्य, योगेश आर्य व साधु, सन्यासियों सहित सैकड़ों आर्यजन उपस्थित रहे।

स्वदेश | आगरा शनिवार 12 अक्टूबर 2019

यज्ञ ऋषियों की प्राचीन संस्कृतिः डा. अर्चना प्रिय

कोसीकलां। आर्य समाज वार्षिकोत्सव के तृतीय दिन संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि यज्ञ हमारे ऋषियों की प्राचीन संस्कृति है। महर्षि दयानंद ने हमें पांच यज्ञ करने के लिए आदेशित किया है, जिन्हें सभी लोगों को अपने घरों में प्रतिष्ठित करना होगा। उन्होंने कहा कि वेदों में यज्ञ की महिमा का वर्णन है। बच्चों को भी संस्कारित कर यज्ञ पद्धति से जोड़ना होगा। आचार्य भूदेव शास्त्री ने कहा कि ...

- कोसीकलां आर्य समाज के वार्षिकोत्सव के तृतीय दिन विचार व्यक्त करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य

दैनिक जागरण आगरा/मथुरा, 13 अक्टूबर 2019

भारतीय संस्कृति का आधार है नारी : डा. अर्चना प्रिय

कोसीकला के आर्यनगर मे आर्य समाज के सम्मेलन में प्रवचन देती डॉ. अर्चना प्रिय • जागरण

संवाद सूत्र, कोसीकलां : आर्य समाज धर्मशाला में शनिवार को संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ.अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही नारी का स्थान पूज्यनीय रहा है। समय-समय पर नारी ने कभी मां, बहन, बेटी तो कभी स्त्री के रूप में अपना सर्वस्व समर्पित कर राष्ट्र की रक्षा की है, अपनी संस्कृति को बचाया है। नारी राष्ट्र जीवन का आधार है। उन्होंने कहा कि वर्तमान में नारी दिशा भ्रमित हुई है। पश्चात सभ्यता के रंग में रंगी जा रही है, जो अत्यंत ही सोचनीय है। आचार्य भूदेव शास्त्री ने कहा कि आजादी की लड़ाई में आर्य समाज का अहम योगदान रहा है। सत्यार्थ प्रकाश से अनेक क्रांतिकारियों को प्रेरणा हुई। महाशय चतर सिंह, उदयवीर आर्य, सुरभि आर्या ने भजन प्रस्तुत किए। प्रातःकाल 21 कुंडीय यज्ञ आचार्य देशराज शास्त्री के निर्देशन में हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में यज्ञप्रेमियों द्वारा आहुतियां दीं। आर्य समाज के प्रधान डॉ.अमर सिंह पौनिया, विजय आर्य, नंदकिशोर आर्य, ओमप्रकाश आर्य, भगवान देव वानप्रस्थी, विवेक प्रिय आर्य, दीनदयाल आर्य, शरद आर्य, भोपाल आर्य, योगेश आर्य, वीरेंद्र सिंह आर्य मौजूद रहे।

THE SEA EXPRESS | आगरा शनिवार, 12 अक्टूबर 2019

यज्ञ ऋषियों की प्राचीन संस्कृतिः डॉ. अर्चना प्रिय

कोसीकलां। आर्य समाज कोसीकलां के वार्षिकोत्सव के तृतीय दिन संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि यज्ञ हमारे ऋषियों की प्राचीन संस्कृति है। महर्षि दयानंद ने हमें पांच यज्ञ करने के लिए आदेशित किया है, जिन्हें सभी लोगों को अपने घरों में प्रतिष्ठित करना होगा।

उन्होंने कहा कि वेदों में यज्ञ की महिमा का वर्णन है। बच्चों को भी संस्कारित कर यज्ञ पद्धति से जोड़ना होगा। आचार्य भूदेव शास्त्री ने कहा कि जीवन में सुगन्ध व ...

12 अक्टूबर 2019 | राजपथ मथुरा

यज्ञ ऋषियों की प्राचीन संस्कृतिः अर्चना प्रिय

आर्य समाज धर्मशाला में आर्य विद्वानों ने बताई यज्ञ की महिमा

कोसीकलां, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। आर्य समाज कोसीकलां के वार्षिकोत्सव के तृतीय दिन संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि यज्ञ हमारे ऋषियों की प्राचीन संस्कृति है। महर्षि दयानंद ने हमें पांच यज्ञ करने के लिए आदेशित किया है, जिन्हें सभी लोगों को अपने घरों में प्रतिष्ठित करना होगा। उन्होंने कहा कि वेदों में यज्ञ की महिमा का वर्णन है। बच्चों को भी संस्कारित कर यज्ञ पद्धति से जोड़ना होगा। आचार्य भूदेव शास्त्री ने कहा कि जीवन में सुगन्ध व शक्ति केवल यज्ञ से आ सकती है। इसलिए हमें दैनिक यज्ञ करना चाहिए। प्रातःकाल की बेला में यज्ञ आचार्य देशराज सत्येशु के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य भजनोपदेशक उदयवीर आर्य, महाशय चतर सिंह आर्य, सुरभि आर्या, योगिता आर्या, अशोक आर्य, धर्मवीर आर्य द्वारा भजन श्रोताओं को सुनाए गए। आर्य समाज कोसीकलां के प्रधान डॉ. अमर सिंह पौनियाँ ने बताया कि आज वार्षिकोत्सव के समापन पर प्रातः 21 कुंडीय यज्ञ का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम में आर्य समाज के मंत्री विजय आर्य, ओमप्रकाश आर्य, आचार्य, सत्यप्रिय आर्य, तरुण सेठ, नंदकिशोर आर्य, विवेक प्रिय आर्य, भगवान देव वानप्रस्थी, दीनदयाल आर्य, महेश आर्य आदि मौजूद रहे।

हिन्दुस्तान | आगरा • शनिवार • 12 अक्तूबर 2019 •

यज्ञ हमारे ऋषियों की प्राचीन संस्कृतिःडॉ. अर्चना प्रिय आर्य

कोसीकला | हिन्दुस्तान संवाद

आर्य नगर स्थित आर्य समाज धर्मशाला में समाज के 81वें वार्षिकोत्सव के तृतीय दिन शुक्रवार को समाज के विभिन्न वक्ताओं ने आर्य समाज का उद्देश्य एवं अपने घरों में लोगों द्वारा किए जाने वाले यज्ञ की महत्वता से अवगत कराया।

संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि यज्ञ हमारे ऋषियों की प्राचीन संस्कृति रही है। महर्षि दयानन्द ने हमे पांच यज्ञ करने के लिए आदेशित किया है। आचार्य भूदेश शास्त्री ने कहा कि जीवन में सुगन्ध व शक्ति सिर्फ यज्ञ से आ सकती है। इसलिए हमें दैनिक यज्ञ करना चाहिए। इसके अलावा कार्यक्रम में आर्य समाज भजनोपदेशक उदयवीर आर्य, महाशय चतरसिंह आर्य, सुरभि आर्य, योगिता आर्य, अशोक आर्य, धर्मवीर आर्य द्वारा भजन प्रस्तुत किए गए। आर्य समाज के प्रधान डॉ. अमर सिंह पौनिया ने बताया कि आज 12 अक्तूबर को कार्यक्रम के समापन अवसर पर 21 कुंडीय यज्ञ का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने वार्षिकोत्सव में अधिक से अधिक संख्या में पहुंच पुण्य लाभ लेने की गुजारिश की है। विजय आर्य, ओमप्रकाश आर्य, सत्यप्रिय आर्य, तरूण सेठ, नन्दकिशोर आर्य, विवेक प्रिय आर्य, भगवान देव वानप्रस्ति, दीनदयाल आर्य, महेश आर्य आदि मौजूद थे।

THE SEA EXPRESS | आगरा रविवार, 13 अक्टूबर 2019

भारतीय संस्कृति का आधार है नारीः डॉ. अर्चना प्रिय

आर्य समाज के वार्षिकोत्सव के समापन सत्र को संबोधित करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्या।

छोटी सी बात | मथुरा | 12 अक्टूबर 2019

विद्वानों ने बताई यज्ञ की महिमा

कोसीकलां (छोटी सी बात)। आर्य समाज कोसीकलां के वार्षिकोत्सव के तृतीय दिन संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि यज्ञ हमारे ऋषियों की प्राचीन संस्कृति है। महर्षि दयानंद ने हमें पांच यज्ञ करने के लिए आदेशित किया है, जिन्हें सभी लोगों को अपने घरों में प्रतिष्ठित करना होगा। उन्होंने कहा कि वेदों में यज्ञ की महिमा का वर्णन है। बच्चों को भी संस्कारित कर यज्ञ पद्धति से जोड़ना होगा। आचार्य भूदेव शास्त्री ने कहा कि जीवन में सुगन्ध व शक्ति केवल यज्ञ से आ सकती है। इसलिए हमें दैनिक यज्ञ करना चाहिए। प्रातःकाल की बेला में यज्ञ आचार्य देशराज सत्येशु के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य भजनोपदेशक उदयवीर आर्य, महाशय चतर सिंह आर्य, सुरभि आर्या, योगिता आर्या, अशोक आर्य, धर्मवीर आर्य द्वारा भजन श्रोताओं को सुनाए गए। आर्य समाज कोसीकलां के प्रधान डॉ. अमर सिंह पौनियाँ ने बताया कि आज वार्षिकोत्सव के समापन पर प्रातः 21 कुंडीय यज्ञ का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम में आर्य समाज के मंत्री विजय आर्य, ओमप्रकाश आर्य, आचार्य, सत्यप्रिय आर्य, तरुण सेठ, नंदकिशोर आर्य, विवेक प्रिय आर्य, भगवान देव वानप्रस्थी, दीनदयाल आर्य, महेश आर्य आदि मौजूद रहे।

छोटी सी बात | मथुरा | 11 अक्टूबर 2019

आर्य समाज की शिक्षा से ही पाखंड का खात्मा संभव

THE SEA EXPRESS | आगरा शुक्रवार, 11 अक्टूबर 2019

दयानंद के रास्ते पर चलकर ही बनेगा भारत विश्वगुरु

अमर उजाला | आगरा | रविवार, 13 अक्तूबर 2019

भारतीय संस्कृति का आधार है नारी : डॉ. अर्चना

कोसीकलां। आर्य समाज धर्मशाला में शनिवार संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ.अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही नारी का स्थान पूजनीय रहा है। समय-समय पर नारी ने कभी मां, बहिन, बेटी तो कभी स्त्री के रूप में अपना सर्वस्व समर्पित कर के राष्ट्र की रक्षा की है, अपनी संस्कृति को बचाया है। नारी राष्ट्र जीवन का आधार है। उन्होंने कहा कि वर्तमान में नारी दिशा भ्रमित हुई है। पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रंगी जा रही है। जो अत्यंत ही सोचनीय है। नारी जाति को अपने अतीत को याद करते हुए अपने गौरवपूर्ण स्थान को सुरक्षित रखने की जरूरत है।आर्य समाज के डा.अमर सिंह पौनिया, विजय आर्य, नंदकिशोर आर्य, ओमप्रकाश आर्य, भगवान देव वानप्रस्थी रहे।

11 अक्टूबर 2019 | राजपथ मथुरा

दयानंद के रास्ते पर चलकर ही बनेगा भारत विश्वगुरु

आर्य समाज धर्मशाला में आयोजित वार्षिकोत्सव में आर्य विद्वानों ने रखे विचार

आज | आगरा, 13 अक्टूबर 2019

भारतीय संस्कृति का आधार है नारीः डॉ. अर्चना प्रिय

आर्य समाज कोसीकलां के वार्षिकोत्सव का समापन

कोसीकलां। आर्यनगर स्थित आर्य समाज धर्मशाला में शनिवार को समाज के वार्षिकोत्सव का समापन हुआ। जिसमें आये आर्य विद्वानों ने विभिन्न विषयों पर विचार रखे। संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ.अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही नारी का स्थान पूज्यनीय रहा है। समय-समय पर नारी ने कभी मां, बहिन, बेटी तो कभी स्त्री के रूप में अपना सर्वस्व समर्पित कर के राष्ट्र की रक्षा की है, अपनी संस्कृति को बचाया है। नारी राष्ट्र जीवन का आधार है। उन्होंने कहा कि वर्तमान में नारी दिशा भ्रमित हुई है। पश्चात सभ्यता के रंग में रंगी जा रही है जो अत्यंत ही सोचनीय है। नारी जाति को अपने अतीत को याद करते हुए अपने गौरवपूर्ण स्थान को सुरक्षित रखने की जरूरत है। आचार्य भूदेव शास्त्री ने कहा कि आजादी की लड़ाई में आर्य समाज का अहम योगदान रहा है। सत्यार्थ प्रकाश से अनेक क्रांतिकारियों को प्रेरणा हुई। कार्यक्रम को महाशय चतर सिंह, उदयवीर आर्य, सुरभि आर्या ने भजन प्रस्तुत किए। प्रातःकाल 21 कुंडीय यज्ञ आचार्य देशराज शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में यज्ञप्रेमियों द्वारा आहुतियां दी गई। संचालन वीरेंद्र सिंह आर्य व आभार आर्य समाज के प्रधान डॉ.अमर सिंह पौनियां ने किया। कार्यक्रम में आर्य समाज के मंत्री विजय आर्य, नंदकिशोर आर्य, ओमप्रकाश आर्य, भगवान देव वानप्रस्थी, विवेक प्रिय आर्य, दीनदयाल आर्य, शरद आर्य, भोपाल आर्य, योगेश आर्य व साधु, सन्यासियों सहित सैकड़ों आर्यजन उपस्थित रहे।

आज | आगरा, 12 अक्टूबर 2019

यज्ञ ऋषियों की प्राचीन संस्कृति-डॉ.अर्चना प्रिय

कोसीकलां। आर्य समाज कोसीकलां के वार्षिकोत्सव के तृतीय दिन संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ.अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि यज्ञ हमारे ऋषियों की प्राचीन संस्कृति है। महर्षि दयानंद ने हमें पांच यज्ञ करने के लिए आदेशित किया है, जिन्हें सभी लोगों को अपने घरों में प्रतिष्ठित करना होगा। उन्होंने कहा कि वेदों में यज्ञ की महिमा का वर्णन है। बच्चों को भी संस्कारित कर यज्ञ पद्धति से जोड़ना होगा। आचार्य भूदेव शास्त्री ने कहा कि जीवन में सुगन्ध व शक्ति केवल यज्ञ से आ सकती है। इसलिए हमें दैनिक यज्ञ करना चाहिए। प्रातःकाल की बेला में यज्ञ आचार्य देशराज सत्येशु के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य भजनोपदेशक उदयवीर आर्य, महाशय चतर सिंह आर्य, सुरभि आर्या, योगिता आर्या, अशोक आर्य, धर्मवीर आर्य द्वारा भजन श्रोताओं को सुनाए गए। आर्य समाज कोसीकलां के प्रधान डॉ.अमर सिंह पौनियाँ ने बताया कि आज वार्षिकोत्सव के समापन पर प्रातः 21 कुंडीय यज्ञ का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम में आर्य समाज के मंत्री विजय आर्य, ओमप्रकाश आर्य, आचार्य, सत्यप्रिय आर्य, तरुण सेठ, नंदकिशोर आर्य, विवेक प्रिय आर्य, भगवान देव वानप्रस्थी, दीनदयाल आर्य, महेश आर्य आदि मौजूद रहे।

दैनिक जागरण आगरा/मथुरा , 12 अक्टूबर 2019

यज्ञ ऋषियों की प्राचीन संस्कृति

संसू, कोसीकलां : आर्य समाज कोसीकलां के वार्षिकोत्सव के तीसरे दिन संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ.अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि यज्ञ हमारे ऋषियों की प्राचीन संस्कृति है। महर्षि दयानंद ने हमें पांच यज्ञ करने के लिए आदेशित किया है। आचार्य भूदेव शास्त्री ने कहा कि जीवन में सुगंध व शक्ति केवल यज्ञ से आ सकती है। आर्य भजनोपदेशक उदयवीर आर्य, महाशय चतर सिंह आर्य, सुरभि आर्या, योगिता आर्या, अशोक आर्य, धर्मवीर आर्य की ओर से भजन श्रोताओं को सुनाए गए। आर्य समाज कोसीकलां के प्रधान डॉ. अमर सिंह पौनिया ने बताया कि वार्षिकोत्सव के समापन पर सुबह 21 कुंडीय यज्ञ का आयोजन होगा। आर्य समाज के मंत्री विजय आर्य, ओमप्रकाश आर्य, आचार्य, सत्यप्रिय आर्य, तरुण सेठ, नंदकिशोर आर्य, विवेक प्रिय आर्य आदि मौजूद रहे।

अमर उजाला | शनिवार, 12 अक्तूबर 2019

आर्य विद्वानों ने बताई यज्ञ की महिमा

कोसीकलां। आर्य समाज के वार्षिकोत्सव के तीसरे दिन शुक्रवार को संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने यज्ञ की महिमा बताई। कहा कि बच्चों को संस्कारित कर यज्ञ पद्धति से जोड़ना होगा। आचार्य भूदेव शास्त्री ने कहा कि हमें रोज यज्ञ करना चाहिए। आचार्य देशराज सत्येशु के मंत्रोच्चारणों के मध्य सुबह यज्ञ किया गया। भजनोपदेशक उदयवीर आर्य, महाशय चतर सिंह आर्य, सुरभि आर्या, योगिता आर्या, अशोक आर्य, धर्मवीर आर्य ने भजन सुनाए। आर्य समाज प्रधान डॉ. अमर सिंह पौनिया ने बताया कि शनिवार को वार्षिकोत्सव के समापन पर सुबह 21 कुंडीय यज्ञ का आयोजन किया जाएगा। सभा के प्रांतीय कार्य समिति सदस्य शरद आर्य गिडोहिया, मंत्री विजय आर्य, ओमप्रकाश आर्य, आचार्य, सत्यप्रिय आर्य, तरुण सेठ, नंदकिशोर आर्य, विवेक प्रिय आर्य, भगवान देव वानप्रस्थी, दीनदयाल आर्य, महेश आर्य, राजेंद्र आर्य, भगवत आर्य आदि थे।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां मीडिया की नजरों में

आज आगरा, 07 दिसम्बर 2019

ऊंचागांव में हुआ वैदिक सत्संग का आयोजन

मथुरा। संस्कार जागृति मिशन के अंतर्गत ऊंचागांव में यज्ञ व वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया। जिसमें गांव सहित क्षेत्र के लोगों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। मथुरा से आये वेद मंदिर अधिष्ठाता आचार्य स्वदेश महाराज के ब्रह्मत्व यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य श्री ने कहा कि हमारे ऋषि मुनियों द्वारा बताए 16 संस्कारों का आज घरों से खात्मा होता जा रहा है। हमारी युवा पीढ़ी रास्ते से भटक रही है। माता पिता को बच्चों के प्रति सजग रहकर उनमें संस्कारों को पिरोहना होगा। उन्होंने कहा कि आज मनुष्य दु:खी रहता है, उसका प्रमुख कारण है कि उसने ईश्वर के प्रति अपना समर्पण नहीं कर रखा है। जिस दिन मनुष्य पूर्ण रूप से ईश्वर के प्रति समर्पण कर देगा उसे सुख, शांति व आनंद की प्राप्ति अवश्य होगी। कार्यक्रम आयोजक संस्कार जागृति मिशन के संरक्षक सत्यप्रिय आर्य पूर्व प्रधान द्वारा संचालन व आभार व्यक्त किया गया। यज्ञ के यजमान मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य व नीति प्रिय आर्य द्वारा आचार्य श्री का माल्यार्पण कर व शाल ओढ़ाकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से उपजा प्रदेश उपाध्यक्ष व ब्रज प्रेस क्लब के अध्यक्ष कमलकांत उपमन्यु, संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ.अर्चना प्रिय आर्य, भोला फौजी, राजनलाल आर्य, यशपाल आर्य, लखन सिंह आर्य, रतन सिंह आर्य, वंदना प्रिय आर्य, मुकटपाल सिंह, नाहर सिंह, रामदेव सिंह, ज्वाला पुजारी, रमेश फौजी सहित सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

25 अक्टूबर 2019 **राजपथ मथुरा**

स्वदेशी दीप जलाकर मनाएं दीवाली: डॉ. अर्चना

संस्कार जागृति मिशन ने की चाईनीज वस्तुओं के बहिष्कार की अपील

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने लोगों से अपील करते हुए कहा कि वे दीपावली पर्व पर बाजार से चाइनीज वस्तुओं को न खरीदें। इनकी जगह स्वदेशी वस्तुओं की खरीद को प्राथमिकता दें। चाइनीज लाइटों और दीयों की जगह मिट्टी के दीप जलाकर दिवाली मनाएं। इससे देश को आर्थिक नुकसान भी नहीं होगा और अपनी संस्कृति के अनुरूप उत्सव मनाया जा सकेगा। उन्होंने कहा कि दीपावली पर्व पर बाजार में चाइनीज वस्तुओं की भरमार है। आकर्षक और सस्ती वस्तुओं के चक्कर में आकर लोग चाइनीज वस्तुओं की खरीद करते हैं। इसके चलते अपने देश का पैसा दूसरे देश में जाता है। ऐसे में देश की आर्थिक स्थिति कमजोर होती है। उन्होंने लोगों से अपील की कि दीपावली पर्व पर चाइनीज झालर, बल्ब और अन्य सामान न खरीदें। स्वदेशी वस्तुओं की ही खरीद करें। इससे दिवाली के कारोबार से जुड़े गरीब परिवारों की भी मदद हो जाएगी।

छोटीसीबात मथुरा । 10 दिसम्बर 2019

फिल्म पानीपत को बैन करने की मांग

मथुरा (छोटी सी बात)। संस्कार जागृति मिशन द्वारा बैठक कर फिल्म पानीपत में महाराजा सूरजमल के चरित्र के साथ फिल्म निर्माताओं द्वारा छेड़छाड़ पर आक्रोश व्यक्त किया गया और फिल्म को बैन करने की मांग सरकार से की। मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि पानीपत फिल्म में महाराजा सूरजमल के इतिहास को गलत तथ्यों के साथ प्रस्तुत किया गया है।

महाराजा सूरजमल एक महान अजेय योद्धा रहे हैं। विवादित दृश्यों को हटा निर्माताओं को जनमानस से क्षमा मांगनी चाहिए। आर्य ने कहा कि बार-बार फिल्म निर्माताओं द्वारा महापुरुषों को गलत ढंग से हमारी युवा पीढ़ी के समक्ष पेश किया जा रहा है, जोकि बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है। सरकार को इस दिशा में भी कठोर कदम उठाते हुए ऐसे फिल्म निर्देशकों आजीवन बैन कर देना चाहिए। संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि फिल्म के विवादित दृश्यों को लेकर फिल्म निर्माता और सरकार को फिर से मंथन करना होगा तथा लोगों की भावनाओं के अनुरूप उन्हें हटाना होगा। बैठक में प्रमुख रूप से मिशन की उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य, प्रतगतिशील जाट महा संघ के जिलाध्यक्ष डॉ.कपिल प्रताप सिंह, सचिव विवेक प्रिय आर्य, रामप्रकाश आर्य, नीति प्रिय आर्य, लाल सिंह आर्य आदि थे।

10 दिसम्बर 2019 **राजपथ मथुरा**

महाराजा सूरजमल महान अजेय योद्धा थे: अर्चना प्रिय

संस्कार जागृति मिशन ने की फिल्म पानीपत को बैन करने की मांग

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। संस्कार जागृति मिशन द्वारा बैठक कर फिल्म पानीपत में महाराजा सूरजमल के चरित्र के साथ फिल्म निर्माताओं द्वारा छेड़छाड़ पर आक्रोश व्यक्त किया गया और फिल्म को बैन करने की मांग सरकार से की। मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि पानीपत फिल्म में महाराजा सूरजमल के इतिहास को गलत तथ्यों के साथ प्रस्तुत किया गया है। महाराजा सूरजमल एक महान अजेय योद्धा रहे हैं। उन्होंने कहा कि विवादित दृश्यों को हटा निर्माताओं को जनमानस से क्षमा मांगनी चाहिए। डॉ. आर्य ने कहा कि बार-बार फिल्म निर्माताओं द्वारा महापुरुषों को गलत ढंग से हमारी युवा पीढ़ी के समक्ष पेश किया जा रहा है जोकि बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है। सरकार को इस दिशा में भी कठोर कदम उठाते हुए ऐसे फिल्म निर्देशकों आजीवन बैन कर देना चाहिए।

संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि फिल्म के विवादित दृश्यों को लेकर फिल्म निर्माता और सरकार को फिर से मंथन करना होगा तथा लोगों की भावनाओं के अनुरूप उन्हें हटाना होगा। बैठक में प्रमुख रूप से मिशन की उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य, प्रतगतिशील जाट महा संघ के जिलाध्यक्ष डॉ. कपिल प्रताप सिंह, सचिव विवेक प्रिय आर्य, रामप्रकाश आर्य, नीति प्रिय आर्य, लाल सिंह आर्य आदि थे।

06 दिसम्बर 2019 **राजपथ मथुरा**

ऊंचागांव में हुआ वैदिक सत्संग

वेद मंदिर अधिष्ठाता आचार्य स्वदेश महाराज के ब्रह्मत्व यज्ञ सम्पन्न

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। संस्कार जागृति मिशन के अंतर्गत ऊंचागांव में यज्ञ व वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया। जिसमें गांव सहित क्षेत्र के लोगों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। मथुरा से आये वेद मंदिर अधिष्ठाता आचार्य स्वदेश महाराज के ब्रह्मत्व यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य श्री ने कहा कि हमारे ऋषि मुनियों द्वारा बताए 16 संस्कारों का आज घरों से खात्मा होता जा रहा है। हमारी युवा पीढ़ी रास्ते से भटक रही है। माता पिता को बच्चों के प्रति सजग रहकर उनमें संस्कारों को पिरोहना होगा। उन्होंने कहा कि आज मनुष्य दु:खी रहता है उसका प्रमुख कारण है कि उसने ईश्वर के प्रति अपना समर्पण नहीं कर रखा है। जिस दिन मनुष्य पूर्ण रूप से ईश्वर के प्रति समर्पण कर देगा उसे सुख शांति व आनंद की प्राप्ति अवश्य होगी। कार्यक्रम आयोजक

आज आगरा, 09 अक्टूबर 2019

संस्कार जाग्रति मिशन ने यज्ञ कर मनाया विजयादशमी का पर्व

मथुरा। संस्कार जागृति मिशन द्वारा मंगलवार को ऊँचागाँव स्थित कार्यालय पर विजयादशमी का पर्व यज्ञ कर मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि विजयादशमी पर हमें प्रेरणा लेनी चाहिए कि जो भी कर्म करें समर्पण व यज्ञ की भावना से करें। जब यज्ञ की भावना से हमारा कार्य होगा तो जीवन पवित्र होगा। बिना यज्ञ की भावना से राष्ट्र जीवित नहीं रहता है। जहां इदंनमम की भावना है वहीं तो स्वर्ग व आनंद है। अध्ययन डॉ.अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि सभी को भगवान श्रीराम के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए और धर्म के मार्ग पर चलना चाहिए। सचिव विवेक प्रिय आर्य ने कहा कि विजयादशमी का पर्व असत्य पर सत्य की और अधर्म पर धर्म की जीत का प्रतीक है। यज्ञ में प्रमुख रूप से सरोज रानी आर्य, नीति प्रिय आर्य, उत्कर्ष प्रताप सिंह आर्य आदि थे।

छोटीसीबात मथुरा । 25 अक्टूबर 2019

स्वदेशी दीप जलाकर मनाएं दीवाली: डॉ. अर्चना

मथुरा (छोटी सी बात)। संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ.अर्चना प्रिय आर्य ने लोगों से अपील करते हुए कहा कि वे दीपावली पर्व पर बाजार से चाइनीज वस्तुओं को न खरीदें। इनकी जगह स्वदेशी वस्तुओं की खरीद को प्राथमिकता दें। चाइनीज लाइटों और दीयों की जगह मिट्टी के दीप जलाकर दिवाली मनाएं। इससे देश के

09 अक्टूबर 2019 **राजपथ मथुरा**

संस्कार जाग्रति मिशन ने मनाया विजयादशमी पर्व

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। संस्कार जागृति मिशन द्वारा ऊँचागाँव स्थित कार्यालय पर विजयादशमी का पर्व यज्ञ कर मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि विजयादशमी पर हमें प्रेरणा लेनी चाहिए कि जो भी कर्म करें समर्पण व यज्ञ की भावना से करें। डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि सभी को भगवान श्रीराम के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए और धर्म के मार्ग पर चलना चाहिए। सचिव विवेक प्रिय आर्य ने कहा कि विजयादशमी का पर्व असत्य पर सत्य की और अधर्म पर धर्म की जीत का प्रतीक है। यज्ञ में प्रमुख रूप से सरोज रानी आर्य, नीति प्रिय आर्य, उत्कर्ष प्रताप सिंह आर्य आदि थे।

हिन्दुस्तान आगरा • बुधवार • 11 दिसम्बर 2019

फिल्म पानीपत को बैन करने की मांग

मथुरा। संस्कार जागृति मिशन अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य और संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि पानीपत फिल्म में महाराजा सूरजमल के इतिहास को गलत तथ्यों के साथ प्रस्तुत किया गया है। किसी की छवि को बेवजह बिगाड़ना अच्छी बात नहीं है। इसके लिए फिल्म निर्माता क्षमा मांगें। उन्हें विवादित दृश्यों को हटाना देना चाहिए।

छोटीसीबात मथुरा । 06 दिसम्बर 2019

ऊंचागांव में हुआ वैदिक सत्संग

मथुरा (छोटी सी बात)। संस्कार जागृति मिशन के अंतर्गत ऊंचागांव में यज्ञ व वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया। वेद मंदिर अधिष्ठाता आचार्य स्वदेश महाराज के ब्रह्मत्व यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य ने कहा कि हमारे ऋषि मुनियों द्वारा बताए 16 संस्कारों का आज घरों से खात्मा होता जा रहा है। हमारी युवा पीढ़ी रास्ते से भटक रही है। माता पिता को बच्चों के प्रति सजग रहकर उनमें संस्कारों को पिरोहना होगा। उन्होंने कहा कि आज मनुष्य दु:खी रहता है, उसका प्रमुख कारण है कि उसने ईश्वर के प्रति अपना समर्पण नहीं कर रखा है। जिस दिन मनुष्य पूर्ण रूप से ईश्वर के प्रति समर्पण कर देगा उसे सुख, शांति व आनंद की प्राप्ति अवश्य होगी। सत्यप्रिय आर्य ने संचालन कर आभार व्यक्त किया। यज्ञ के यजमान मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य व नीति प्रिय आर्य द्वारा आचार्य का माल्यार्पण कर व शाल ओढ़ाकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम में कमलकांत उपमन्यु, अर्चना प्रिय आर्य, भोला फौजी, राजनलाल आर्य, यशपाल आर्य, लखन सिंह आर्य, रतन सिंह आर्य, वंदना प्रिय आर्य, मुकटपाल सिंह, नाहर सिंह, रामदेव सिंह, ज्वाला पुजारी, रमेश फौजी आदि मौजूद थे।

आज आगरा, 11 दिसम्बर 2019

महाराजा सूरजमल महान अजेय योद्धा थे : डॉ.अर्चना प्रिय आर्य

मथुरा। संस्कार जागृति मिशन द्वारा बैठक कर फिल्म पानीपत में महाराजा सूरजमल के चरित्र के साथ फिल्म निर्माताओं द्वारा छेड़छाड़ पर आक्रोश व्यक्त किया गया और फिल्म को बैन करने की मांग सरकार से की। मिशन की अध्यक्ष डॉ.अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि पानीपत फिल्म में महारा. जा सूरजमल के इतिहास को गलत तथ्यों के साथ प्रस्तुत किया गया है। महाराजा सूरजमल एक महान अजेय योद्धा रहे हैं। उन्होंने कहा कि विवादित दृश्यों को हटा निर्माताओं को जनमानस से चाहिए। डॉ.आर्य ने कहा कि बार-बार फिल्म निर्माताओं द्वारा महापुरुषों को गलत ढंग वा पीढ़ी के समक्ष पेश किया जा रहा है, जोकि बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है। सरकार को ं भी कठोर कदम उठाते हुए ऐसे फिल्म निर्देशकों आजीवन बैन कर देना चाहिए। ार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि फिल्म के विवादित दृश्यों को लेकर फिल्म निर्माता को फिर से मंथन करना होगा तथा लोगों की भावनाओं के अनुरूप उन्हें हटाना होगा। मुख रूप से मिशन की उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य, प्रतगतिशील जाट महा संघ के डॉ.कपिल प्रताप सिंह,, नीति प्रिय आर्य, लाल सिंह आर्य आदि थे।

आज आगरा, 26 अक्टूबर 2019

स्वदेशी दीप जलाकर मनाएं दीवाली : डॉ.अर्चना प्रिय

मथुरा। संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ.अर्चना प्रिय आर्य ने लोगों से अपील करते हुए कहा कि वे दीपावली पर्व पर बाजार से चाइनीज वस्तुओं को न खरीदें। इनकी जगह स्वदेशी वस्तुओं की खरीद को प्राथमिकता दें। चाइनीज लाइटों और दीयों की जगह मिट्टी के दीप जलाकर दिवाली मनाएं। इससे देश को आर्थिक नुकसान भी नहीं होगा और अपनी संस्कृति के अनुरूप उत्सव मनाया जा सकेगा। उन्होंने कहा कि दीपावली पर्व पर बाजार में चाइनीज वस्तुओं की भरमार है। आकर्षक और सस्ती वस्तुओं के चक्कर में आकर लोग चाइनीज वस्तुओं की खरीद करते हैं। इसके चलते अपने देश का पैसा दूसरे देश में जाता है। ऐसे में देश की आर्थिक स्थिति कमजोर होती है। उन्होंने लोगों से अपील की कि दीपावली पर्व पर चाइनीज झालर, बल्ब और अन्य सामान न खरीदे। स्वदेशी वस्तुओं की ही खरीद करें। इससे दिवाली के कारोबार से जुड़े गरीब परिवारों की भी मदद हो जाएगी। दीपावली पर पटाखों से पर्यावरण को हानि पहुंचती है, इसके लिए घरों में यज्ञ बहुत ही आवश्यक है, क्योंकि यज्ञ से जितनी पर्यावरण की शुद्धि सम्भव है वो और किसी से नहीं।

■ 25 अक्टूबर 2019। **ब्रज गरिमा**

स्वदेशी दीप जलाकर मनाएं दीवाली : डॉ.अर्चना प्रिय

मथुरा, संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने लोगों से अपील करते हुए कहा कि वे दीपावली पर्व पर बाजार से चाइनीज वस्तुओं को न खरीदें। इनकी जगह स्वदेशी वस्तुओं की खरीद को प्राथमिकता दें। चाइनीज लाइटों और दीयों की जगह मिट्टी के दीप जलाकर दिवाली मनाएं। इससे देश को आर्थिक नुकसान भी नहीं होगा और अपनी संस्कृति के अनुरूप उत्सव मनाया जा सकेगा। उन्होंने कहा कि दीपावली पर्व पर बाजार में चाइनीज वस्तुओं की भरमार है। आकर्षक और सस्ती वस्तुओं के चक्कर में आकर लोग चाइनीज वस्तुओं की खरीद करते हैं। इसके चलते अपने देश का पैसा दूसरे देश में जाता है। ऐसे में देश की आर्थिक स्थिति कमजोर होती है। उन्होंने लोगों से अपील की कि दीपावली पर्व पर चाइनीज झालर, बल्ब और अन्य सामान न खरीदें। स्वदेशी वस्तुओं की ही खरीद करें। इससे दिवाली के कारोबार से जुड़े गरीब परिवारों की भी मदद हो जाएगी।

08 अक्टूबर 2019 **ब्रज गरिमा**

संस्कार जाग्रति मिशन ने यज्ञ कर मनाया विजयादशमी का पर्व

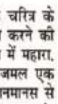

विजयादशमी पर संस्कार जागृति मिशन के कार्यालय पर यज्ञ करते पदाधिकारी।

मथुरा, संस्कार जागृति मिशन द्वारा मंगलवार को ऊँचागाँव स्थित कार्यालय पर विजयादशमी का पर्व यज्ञ कर मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य सत्य प्रिय आर्य ने कहा कि विजयादशमी पर हमें प्रेरणा लेनी चाहिए कि जो भी कर्म करें समर्पण व यज्ञ की भावना से करें। जब यज्ञ की भावना से हमारा कार्य होगा तो जीवन पवित्र होगा। बिना यज्ञ की भावना से राष्ट्र जीवित नहीं रहता है। जहां इदंनमम की भावना है वहीं तो स्वर्ग व आनंद है। डॉ.अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि सभी को भगवान श्रीराम के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए और धर्म के मार्ग पर चलना चाहिए। सचिव विवेक प्रिय आर्य ने कहा कि विजयादशमी का पर्व असत्य पर सत्य की और अधर्म पर धर्म की जीत का प्रतीक है। यज्ञ में प्रमुख रूप से सरोज रानी आर्य, नीति प्रिय आर्य, उत्कर्ष प्रताप सिंह आर्य आदि थे।

संस्कार जागृति मिशन

!! ओ३म् !!

''संस्काराद् द्विज उच्यते''

(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

संस्कार जागृति मिशन

एक कदम संस्कारों की ओर

'संस्कार जागृति मिशन' एक ऐसा प्रयास है जो भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रहा है।

घरों में यज्ञ व बच्चों के संस्कार करायें

बच्चों के जन्मदिन, बुजर्गों की पुण्यतिथि व त्यौहारों पर अपने घरों पर दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कर्म 'यज्ञ' करायें तथा अपने बच्चों के सभी संस्कार करा कर उन्हें संस्कारवान बनायें।

वैदिक रीति से संस्कार व यज्ञ करवाने के लिए सम्पर्क करें

सम्पर्क सूत्र : 09719910557, 09719601088, 09058860992, 08218692727

ई-मेल : sanskarjagratimission@gmail.com

SanskarJagratiMission

Sanskar Jagrati TV

धार्मिक खबर, भजन, प्रवचन, योग, संस्कार समागम तथा संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां देखने को YouTube पर संस्कार जागृति टीवी चेनल को सबस्काइब करें।